Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

मत्स्य पुराण में निहित शिव विषयक वर्णनों का विश्लेषण

डॉ सिद्धार्थ सिंह
असि0 प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।
सन्तोष कुमार पाण्डेय
शोध छात्र, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 7, Issue 1
Page Number : 10-16

Publication Issue :
January-February-2024

Article History
Accepted : 01 Jan 2024
Published : 15 Jan 2024

शोध सारांश – हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के अन्तर्गत अष्टादश पुराणों में मत्स्य पुराण विविध दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह मुख्य रूप से वैष्णव पुराण है जो कि मत्स्य मनु के संवाद से प्रारम्भ होता है। यद्यपि इस पुराण में श्री हरि विष्णु से सम्बन्धित वर्णन ही सर्वाधिक रूप में मिलते हैं, फिर भी पद्म पुराण (उत्तरखण्ड 236/18) में इसे शैव पुराण बताया गया है। इस पुराण में भगवान शिव के सगुण तथा निर्गुण दोनों ही रूपों का वर्णन मिलता है। शिव को परमब्रह्म परमसत तथा परमतत्व बताया गया है। शिव की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता दोनों ही कल्याणकारी है। मनुष्यों की भाँति देवताओं तथा असुरों ने भी शिव को प्रसन्न करके मनवांछित फल प्राप्त किए हैं। शिव की उपासना मूर्ति तथा लिंग दोनो ही रूपों में की जा सकती है। लिंग रूप में शिव पूजा का विशेष महत्व है क्योंकि इसके माध्यम से ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों की पूजा एक साथ की जा सकती है। इस पुराण में शिवरात्रि व्रत तथा गंगा, यमुना, सरस्वती एवं नर्मदा नदी की महिमा बताई गई है। नर्मदा नदी के तट पर स्थित अनेक छोटे–बड़े शैव तीर्थस्थल तथा गंगा नदी के तट पर स्थित काशी का विशेष महत्व है।

कूट शब्द – जटाजूटधारी, सहस्त्रसिरधारी, पिनाकधारी, अनन्तस्वरूपा, सुरश्रेष्ठ, वृषवाहनधारी, भक्त वत्सल, अमरकण्टक,।

मत्स्य पुराण हिन्दू धर्म के पवित्र अष्टादश पुराणों में एक पवित्र पुराण है। इसमें कुल 14000 श्लोक , 291 अध्याय तथा सात कल्पों की मिली–जुली कथा है। भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार के रूप में सप्त ऋषियों तथा वैवष्वत मनु को जो कल्याणकारी उपदेश दिए थे, वे ही इस पुराण में अंकित हैं। श्री विष्णु के मत्स्य अवतार से सम्बन्धित होने के कारण इसका नाम मत्स्य पुराण पड़ा। इसमें व्रत, तीर्थ, दान, जल प्रलय की कथा, नरसिंह अवतार की कथा, सावित्री– सत्यवान की कथा, राजधर्म, तारकासुर के वध की कथा, प्रयाग महात्म्य, काशी महात्म्य, नर्मदा महात्म्य के साथ–साथ त्रिदेवों की महिमा पर भी प्रकाश डाला गया है। पद्म पुराण के उत्तर खण्ड के अनुसार मत्स्य पुराण एक तामस (शैव पुराण) है यद्यपि इस पुराण में भगवान शिव से सम्बन्धित वर्णन विष्णु से सम्बन्धित वर्णनों की तुलना में कम हैं तथा यह

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

पुराण भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार तथा मत्स्य मनु के संवाद से प्रारम्भ होता है। इस पुराण के अन्त में भी भगवान विष्णु का ही गुणगान किया गया है, इसीकारण इसे वैष्णव पुराण माना जाना ही तर्कसंगत है।

मत्स्य पुराण में भगवान शिव को परमब्रह्म, परमसत् तथा परमतत्व स्वीकार किया गया है। ये निर्गुण तथा सगुण दोनों ही रूपों में विद्यमान हैं। एक स्थान पर शुक्राचार्य भगवान शिव की उपासना करते हुए उन्हें शितिकंठ,वर देने वाले, जटाजूटधारी, परम पवित्र , बहुरूप, देवाधिदेव, विष्वबीज, दयालु, विष्वरूप, त्रिनेत्र, सहस्त्रसिरधारी, कपाल एवं पिनाकधारी, असुरों की शक्ति के विनाशक, भूतपति, पशुपति, ऋग् , यजुः, सामवेद स्वरूप, भूतभव्य के नाथ, वषट्कार, निर्गुणरूप व सर्वात्मा कहा है।[1] एक स्थान पर शिव की स्तुति करते हुए कहा गया है कि विष्वरूप तथा गजचर्म को धारण करने वाले शिव को मेरा नमस्कार, पशुपति तथा भूतपति को नमस्कार, प्रणवस्वरूप, ऋक, यजुः तथा सामदेवस्वरूप, स्वाहा, स्वधा, बषट्कार, मन्त्रात्मकस्वरूप भगवान शिव को मेरा नमस्कार –

नमोऽस्तु तुभ्यं भगवान्! विश्वाय कृत्तिवाससे। पशुनां पतये तुभ्यं भूतानांपतये नमः।।

प्रणवे ऋग्यजुः साम्नेस्वाहायचस्वधाय च। वषट्कारात्मने चैव तुभ्यं मन्त्रात्मनेनमः ।।

(म. पु. 47/154–155)

मत्स्य पुराण में एक स्थान पर शिव की स्तुति करते हुए कहा गया है कि विष्व की आत्मा, विष्व के सृजनकर्ता, विष्व में सर्वत्र व्याप्त होकर स्थिर रहने वाले, अपने भक्तों पर दया करने वाले तथा भक्तों को नित्य मनवांछित फल देने वाले शिव को मेरा नमस्कार है।[2] इस पुराण में भगवान शिव को जगत्पति एवं लोकनाथ बताया गया है। एक स्थान पर शिव को भूत–भव्य –ईश, अजन्मा, शूलपाणि, हजारों सूर्य की तरह तेजवान, चन्द्र को धारण करने वाले, वरदान देने के लिए तत्पर रहने वाले, नीललोहित, पशुपति, सबके ईश, जटाजूटधारी, महादेव, शान्तस्वरूप, त्रिनेत्रधारी, विष्वबीज, सभी देवों द्वारा पूजे जाने वाले, विष्व की आत्मा, सृष्टि के रचयिता तथा भक्त वत्सल बताया गया है। कामदेव को भष्मकर देने के पष्चात रति ने भगवान शिव की स्तुति में उन्हें देवताओं द्वारा वन्दित, भक्तों पर दया करने वाले, माया से आवृत्त रहने वाले, कालस्वरूप, परमज्ञानी, नाना भुवानों के निर्माणकर्ता, निर्गुणस्वरूप, विष्वस्त्रष्टा, कई सृष्टियों के निर्माता, भक्तों को मनवांछित फल देने वाले, अनन्तस्वरूपा, चन्द्रमा के धारणकर्ता,वृषवाहनधारी, जगत के नाथ तथा भक्तों को भय से मुक्त रखने वाले कहा है। एक स्थान पर देवर्षि नारद, पर्वत राज हिमाचल को पार्वती के होने वाले पति के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं कि उसका पति (शिव) अजन्मा है, वह भूत, भविष्य सभी के उद्गम का स्रोत है, सबका आश्रयदाता है, वह साक्षात परमेष्वर है। ब्रह्मा, विष्णु, देवताओं के राजा इन्द्र, ऋषि–मुनि जन्म, जरा व मृत्यु के अधीन है, जो परमेष्वर शिव के लिए मात्र क्रीडा के विषय हैं। शिव की इच्छा से ही ब्रह्मा भुवनपति तथा विष्णु विविध युगों में शरीर धारण करते हैं। ब्रह्मा से लेकर स्थावर तक इस संसार में जो कुछ भी है, वह जन्म, मृत्यु एवं दुःख इत्यादि परिवर्तनों के वशीभूत हैं जबकि शिव अचल, स्थाणु, जन्म, जरा से रहित हैं, सभी वस्तुएँ उन्हीं से जन्म लेती हैं, ऐसा महादेव जो जगन्नाथ एवं निरामय है, पार्वती का होने वाला पति होगा।[3] इस पुराण के वर्णनानुसार जब पार्वती की परीक्षा लेने के लिए सप्त ऋषि आते हैं तो पार्वती अपना विचार बदल ले इसलिए वे भगवान शिव के स्परूप की त्रुटिपूर्ण ढंग से व्याख्या करते हैं तब पार्वती कहती हैं कि आप लोग सर्वज्ञाता तथा प्रजापति के समान हैं परन्तु इतना तय है कि आप लोग, शाष्वत ईष्वर जो अजन्मा एवं सृष्टि के कारण हैं, अव्यक्त एवं अमित प्रतिष्ठा वाले हैं, उनको नहीं जानते। उनके विषय में ठीक से ब्रह्मा, विष्णु जैसे देवता भी नही जानते हैं। अतः उनके बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचना व्यर्थ है, जिनसे भूतों का आविर्भाव होता है तथा जिनकी महिमा सभी भूतों व ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, उसे आप लोग नहीं जानते। धरती आकाश, अग्नि,

जल , वायु, किसकी मूर्ति हैं ? वे किससे जन्म लेते हैं ? सूर्य, चन्द्रमा तथा अग्नि किसके नेत्र हैं? देव, दानव किसके लिंग की प्रेमपूर्वक पूजा करते हैं ? जिन्हें ब्रह्मा, इन्द्र जैसे महार्षियों द्वारा महादेव की संज्ञा दी गई है। क्या आप सब उनकी महिमा के बारे में नहीं जानते हैं?[4] मत्स्य पुराण के अनुसार जब समुद्रमंथन से कालकूट नामक विष उत्पन्न होकर सभी देव तथा असुरों को भयभीत करने लगा तब सभी देव तथा असुर उसे पीने के लिए भगवान शिव से प्रार्थना करने लगे। इस समय देव तथा असुर शिव को प्रसन्न करने के लिए उन्हें चारो ओर नेत्र वाले, वज्र, पिनाक, त्रिशूलधारी, रूद्र रूपधारी, काम व काल के विनाशकर्ता, देवाधिदेव, सुरश्रेष्ठ, शुद्व ज्ञान प्रदानकर्ता, कैवल्य–मुक्तिस्वरूप, तीनों लोकों के नाथ, इन्द्र, वरूण, अग्निस्वरूप, ऋग, यजुः तथा सामदेव स्वरूप नानारूपधारी, भक्तों के दुःखहर्ता जैसे शब्द कहे।[5] एक अन्य स्थान पर देव तथा असुर गण विषपान के लिए भगवान शिव की स्तुति करते हुए कहते हैं कि आप भक्तवत्सल, भुवनों के स्वामी, सर्वव्यापी, यज्ञ के अग्र भाग के ग्रहणकर्ता, सौम्य, सोम आदि हैं।[6] मत्स्य पुराण में नर्मदा महात्म्य के अन्तर्गत दशाष्वमेघ यज्ञ का वर्णन मिलता है। इस तीर्थ के पष्चिम दिशा में भृगु नामक ऋषि ने एक हजार वर्ष तक कठिन तपस्या की जिसके कारण उनके शरीर पर चिडियों तथा कीट पतंगों ने अपना निवास स्थान बना लिया। भृगु की कठिन तप से माता पार्वती अत्याधिक प्रभावित हुई तथा उन पर कृपा करने के लिए भगवान शिव से आग्रह करने लगी तब भगवान शिव उनसे बताते हैं कि यह ऋषि अत्याधिक क्रोधी स्वभाव का है इसी कारण ये अब तक मेरी कृपा से वंचित है। भृगु के क्रोध को पार्वती के सामने लाने के लिए शिव ने नन्दी को भृगु को जमीन पर पटक देने का आदेश दिया, अब नन्दी ने ठीक वैसा ही किया। इस पर भृगु क्रोधित होकर नन्दी को शाप देने को उठ खड़े हुए ठीक इसी समय भगवान शिव भृगु को दर्शन दिए अब शिव को देखकर भृगु ने उनकी स्तुति आरम्भ कर दी।

त्वद्गुणनिकरान् वक्तुं कः शक्तो भवति मानुषो नाम।
वासुकिरपि हि कदाचितद्वदनसहस्त्रं भवेद्यस्य।।
सत्वं रजस्तमस्त्वं स्थित्युत्पत्योर्विनाशने देव।
त्वां मुक्त्वा भुवनपते ! भुवनेष्वर नैव दैवतं किच्चित्।।

(मत्स्य पु0 193/37,39)

अर्थात् जिनके गुणों का गान सहस्त्र मुखोंवाले वासुकि भी नही कर सकते, जो सत्व रज तथा तम स्वरूप हैं, जिनसे संसार की उत्पत्ति, पालन तथा संहार होता है, वे भुवनेष्वर तथा दूसरे सभी देवों से श्रेष्ठ हैं।इस पुराण में भगवान शिव के निर्गुण एवं सगुण दोनों ही रूपों की झलक मिलती है। निर्गुण रूप में प्रणवस्वरूप, अव्यक्त ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र इत्यादि देवों के द्वारा भी अगम्य सृष्टि के मूलकारण एवं भवातीत हैं। सगुण रूप में वे जटाजूटधारी, नीलकण्ठ, वर देने को तत्पर रहने वाले, बहुरूपी, देवाधिदेव, सहस्त्र नेत्रधारी, सहस्तसिरधारी, विष्वरूप, असुरों तथा कामदेव का संहार करने वाले सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि को नेत्र रूप में धारण करने वाले सभी देवताओं द्वारा पूज्यनीय, सबके ईश, वृषवाहनधारी, विष्वव्यापी, ब्रह्मा, विष्णु, रूद्ररूपधारी, कर्ता, धर्ता, हर्ता, अजेय, अजन्मा, शाष्वत, भक्तवत्सल, मनवांछित फल देने वाले, अचल, परमेष्वर, जरा–मृत्युरहित, उमापति, परमज्ञान व कैवल्य प्रदान करने वाले, मोह–माया से मुक्ति देने वाले तथा नारायण के प्रिय कहे गए।

शिव की उपसना– मत्स्य पुराण के अनुसार भगवान शिव न सिर्फ भोग व मोक्ष प्रदान करते हैं बल्कि वे भक्तवत्सल, शीघ्र प्रसन्न हो जाने वाले सदैव वरदान देने को तत्पर रहने वाले, मनवांछित फल देने वाले, समस्त दुःखों से मुक्ति प्रदान करने वाले हैं। समुद्रमंथन से जब कालकूट नामक विष निकला जो अपनी ज्वाला से देव, दानव सभी को भयभीत करने लगा, इस विष से मुक्ति का रास्ता ब्रह्मा, विष्णु इन्द्र इत्यादि देवताओं के पास भी न था तब भगवान शिव ने ही सभी को इस विष

से मुक्ति दिलाई इस प्रकार स्पष्ट है कि जो कार्य किसी देव–दानव द्वारा नहीं किया जा सकता था, उस कार्य को भगवान शिव ने कर दिखाया। भगवान शिव की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता दोनों ही लाभदायक है।[7] शिव को प्रसन्न करके मनुष्य के साथ–साथ देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, नाग, किन्नर आदि सभी लोगों ने मनवांछित फल प्राप्त किए हैं। मत्स्य पुराण के अनुसार शुक्राचार्य जिन्हें मृत संजीवनी विद्या प्राप्त हुई, वेद व्यास, बाणासुर, ऋषि भृगु ने भी शिव को प्रसन्न करके मनवांछित फल प्राप्त किए। एक स्थान पर महर्षि भृगु शिव की स्तुति करते हुए कहते हैं कि यम, नियम, यज्ञ, दान, वेदाभ्यास, धारणा व योग आपकी भक्ति के हजारवीं हिस्से के बराबर भी नहीं हैं। जो कोई शठतापूर्वक भी आपको प्रणाम करता है, उस पर भी आपकी कृपा होती है। केवल आपकी भक्ति ही भवसागर को पार कराकर मोक्ष देने वाली है–

यमनियमयज्ञदानवेदाभ्यासाष्च धारणा योग :।
त्वदभक्ते : सर्वमिदं नार्हति हि कलासहस्त्रांशम्।।
शाठ्येन नमति यद्यपि ददासि त्वं भूतिमिच्छतो देव।।
भक्तिर्भवभेदकरी मोक्षाय विनिर्मिता नाथ।। (म.पु. 193/40,42)

एक स्थान पर पार्वती द्वारा प्रष्न किए जाने पर कि यज्ञ तथा उसके मंत्रों के द्वारा ब्राम्हण लोग किस देवता की उपासना करते हैं ? भगवान शिव उनको बताते हैं कि वे सब यज्ञ एवं मंत्रों के माध्य से मेरी ही उपासना करते हैं। भगवान शिव आगे कहते हैं कि जो लोग रूद्र की आराधना करते हैं उन्हें भवसागर से कोई भय नहीं होता है। एक अन्य स्थान पर भगवान शिव पार्वती को बताते हैं कि रूद्र की उपासना दो प्रकार से होती है (1) मंत्र के साथ (2) बिना मंत्र के। ठीक इसी प्रकार योग भी दो प्रकार का होता है। (1) सांख्य (2) योग। भगवान शिव आगे कहते हैं कि जो लोग मुझे सर्वव्यापी मानते हैं वे योगी कहलाते हैं। तथा जो लोग मुझे भूतों की आत्मा के रूप में देखते हैं तथा अपना अंग समझते हैं वे सांख्य योगी कहलाते हैं ये सांख्य योगी कभी नष्ट नहीं होते हैं। एक स्थान पर माता पार्वती, शिव से प्रष्न करती हैं कि योगी लोग आपको किस रूप में देखते हैं ? तब भगवान शिव बताते हैं कि मेरा वास्तविक स्वरूप तो अमूर्त है परन्तु जो व्यक्त रूप है वह ज्योतिरूप है। अतः योगी लोगों को मुझे प्रकाश या ज्योति के रूप में देखना तथा स्तुति करना चाहिए।[8]

मूर्ति रूप में शिव की उपासना (मूर्ति पूजा)– मत्स्य पुराण में भगवान शिव के विविध प्रकार के मूर्तियों के निर्माण की विधि भी बताई गई है, उन मूर्तियों के निर्माण के लिए मानक भी बताए गए हैं इसके अनुसार शिव मूतियों की जटाएँ सूर्य के किरणों की तरह होनी चाहिए, उनके माथे पर चन्द्रमा का अंकन आवष्य होना चाहिए, इन मूर्तियों के जंघे मोटे तथा बाजू व कन्धे तपाए हुए स्वर्ण की भांति होने चाहिए, उनको 16 वर्ष के मुकुटधारी युवक की तरह दिखना चाहिए, इन मूर्तियों की ऑखें चौडी होनी चाहिए, हाथ गज के सूड की तरह तथा जंघे व एड़ी सुडौल, गोलाकार होना चाहिए, उन्हें व्याघ्र की खाल भी धारण किए होना चाहिए। शिव मूर्तियाँ या तो बैठे हुए या फिर नृत्य की मुद्रा में होना चाहिए। दोनों प्रकार की मूर्तियों के निर्माण के लिए पृथक–पृथक निर्देश दिए गए हैं। इसी प्रकार अर्द्धनारीष्वर, भैरव, हरिहर, की मूर्तियों के निर्माण से सम्बन्धित निर्देश भी दिए गए हैं, इन निर्देशों का पालन न करने पर कई प्रकार की हानि भी हो सकती है, उदाहरण के लिए मूर्ति का अधिक अंग निर्मित करने वाले मूर्तिकार का नाश हो जाता है, दुर्बल मूर्ति निर्मित करने पर धन का नाश व अकाल पड़ जाता है, अपूर्ण मूर्तियों की पूजा करने वाला व्यक्ति दरिद्र हो जाता है।

2. **लिंग रूप में शिव की उपासना (लिंगपूजा)** इस पुराण में अनेक उद्वरणों के माध्यम से लिंग पूजा का विशेष महत्व बताया गया है। वाराणसी (काशी) तथा नर्मदा महात्म्य के अध्यायों में काशी की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि

जो व्यक्ति इस स्थान पर शिवलिंग की पूजा करता है वह सौ करोड़ कल्पों में भी पुनर्जन्म नहीं लेता।[9] एक स्थान पर भगवान शिव कहते हैं कि अविमुक्तक्षेत्र (काशी) मुझे बहुत प्रिय है इसलिए मै यहाँ के प्रत्येक शिव लिंगों में विराजमान रहता हूँ। एक स्थान पर बाणासुर अपने सिर शिव लिंग रखकर भगवान शिव से प्रार्थना करता है कि यदि आप चाहें तो मुझे मार डालिए परन्तु मेरे सिर पर स्थापित इस शिवलिंग को नष्ट मत करिए क्योंकि मैने इसकी आजीवन भक्ति की है।[10] मत्स्य पुराण के अनुसार बुद्धिमान व्यक्ति को सुदर्शन स्वर्णलिंग निर्मित करना चाहिए परन्तु यह लकड़ी पत्थर, मिट्टी या किसी अन्य धातु का भी हो सकता है। शिवलिंग का परिमाण मन्दिर के परिणाम के हिसाब से निर्मित होना चाहिए। शिवलिंग के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपरी भाग में भगवान शिव का निवास स्थान होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि लिंग पूजा करके भगवान शिव को प्रसन्न किया जा सकता है। लिंग पूजा के माध्यम से ब्रह्मा, विष्णु महेश (शिव) तीनों की पूजा एक साथ की जा सकती है। इस पुराण में तीनों देवों की एकता पर बल दिया गया है। एक स्थान पर देवता तथा असुरगण भगवान विष्णु की स्तुति करते हुए उन्हें रूद्र की संज्ञा देते हैं।[11] एक स्थान पर देवता लोग ब्रह्मा की स्तुति करते हुए कहते है कि वे ही रूद्र रूप धारण करके सृष्टि का विनाश करते हैं।[12] एक स्थान पर देवता तथा असुरगण भगवान शिव की स्तुति करते हुए उन्हें की संज्ञा देते हैं। [13] इस प्रकार स्पष्ट है कि तीनों ही देव एक दूसरे का रूप धारण कर लेते हैं।

शैव व्रत तथा शैव तीर्थ– मत्स्य पुराण के अनुसार शिवरात्रि (शिव चतुर्दशी) व्रत विशेष महत्व का है। इस व्रत का ठीक से वर्णन तो ब्रह्मा, वृहस्पति तथा इन्द्र जैसे देवता भी नहीं कर सकते हैं। इस व्रत को विधि विधान के अनुसार रहने पर सहस्त्रों अष्वमेघ यज्ञ के बराबर फल मिलते हैं। जो व्यक्ति इस व्रत का पालन करता है वह सौ करोड़ कल्पों तक शिव के गणों का अधिपति रहकर अन्त में भगवान शिव के पद को प्राप्त करने में सफल होता है।[14]मत्स्य पुराण में अनेक शैव तीर्थो का वर्णन किया गया है, इनमें भी काशी, तथा नर्मदा का वर्णन अत्यधिक विस्तृत रूप में मिलता है। काशी की महिमा का वर्णन करते हुए भगवान शिव कहते हैं कि मै काशी को कभी नही छोडूंगा और न ही भविष्य में कभी छोडूगा, इसीकारण इसे अविमुक्त क्षेत्र कहा गया।[15] आगे भगवान शिव कहते है कि, अविमुक्त क्षेत्र में मृत्यु प्राप्त करने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैष्य, शूद्र, म्लेच्छ, वर्णशंकर, चीटी, कीट पतंगे, पशु, पक्षी आदि संकीर्ण जीव भी रूद्ररूप होकर मेरी शरण में आ जाते हैं।[16]अविमुक्त क्षेत्र के शमशान के ऊपर भगवान शिव का अदृष्य दिव्य धाम स्थित है, जो कि भूलोक से भी जुडा है। यह धाम योगी, ब्रह्मचारी, वेदों के जानकार लोगों के लिए दृष्य हैं जबकि जो लोग योगी नहीं है उनके लिए यह शिव धाम अदृष्य है।[17] यहाँ पर स्थित मणिकर्णिका नामक स्थान पर मृत्यु प्राप्त करने वाले व्यक्ति के कान में भगवान शिव स्वयं मंत्र बोलते हैं, इस कारण वह व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर लेता है। अविमुक्त क्षेत्र की तीर्थयात्रा से पापी, अधार्मिक तथा शठ भी दोषमुक्त हो जाते हैं। सृष्टि के प्रलय हो जाने पर भी भगवान शिव इस क्षेत्र में अपने गणों के साथ निवास करते हैं। एक स्थान पर भगवान शिव बताते हैं कि अविमुक्त क्षेत्र में मेरे विष्णु एवं सूर्य में से किसी के भी भक्त की यदि मृत्यु हो जाती है तो वे मुझ में ही विलीन हो जाते हैं।[18] इस स्थान पर निवास करने वाले लोगों के काम, क्रोध लोभ, मत्सर, दम्भ, निद्रा, तन्द्रा व आलस्य शत्रु हैं जो स्वयं इन्द्र द्वारा प्रेरित हैं।[19] इसी स्थान (काशी) पर निवास करते हुए कुबेर ने क्षेत्रपाल का पद, जैगीषव्य ने योगाचार्य का पद प्राप्त किया। इस क्षेत्र में ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, वायु, इन्द्र, जैसे देवता भगवान शिव की भक्ति करते हैं, यहाँ पर जो सिद्वि प्राप्त हो सकती है वह किसी अन्य स्थान पर नहीं, इसीकारण यह क्षेत्र विशेष महत्व का है। यहाँ के प्रमुख तीर्थ स्थलों में दशाष्वमेध, लोलार्क, केशव, बिन्दु माधव प्रमुख है। यहाँ के समस्त तीर्थो में मणिकर्णिका को सर्वश्रेष्ठ तीर्थ कहा गया है।[20] मत्स्य पुराण में नर्मदा एवं उसके तटवर्ती क्षेत्रों में

स्थित तीर्थो का वर्णन विस्तार से किया गया है। एक स्थान पर ऋषि मार्कण्डेय नर्मदा नदी की महिमा का गुणगान करते हुए युधिष्ठिर से बताते हैं कि गंगा कनरवल में एवं सरस्वती कुरूक्षेत्र में पवित्र नदी है परन्तु नर्मदा सभी स्थानों पर समान रूप से पवित्र नदी है। इस पुराण के अनुसार सरस्वती का जल तीन दिन में तथा यमुना का जल सात दिन में एवं गंगा का जल तुरन्त पवित्र कर देता है जबकि नर्मदा का जल दर्शन मात्र से पवित्र कर देता है। इसी कारण नर्मदा समस्त नदियों में सर्वश्रेष्ठ है। इसके तट पर स्थित समस्त स्थावर–जंगम भगवान शिव को प्राप्त हो जाते हैं।[21] नर्मदा तट पर स्थित अनेक छोटे–बड़े तीर्थस्थलों जैसे अमरकण्टक, ज्वालेष्वर, कावेरी संगम, मन्त्रेष्वर, अगारेष्वर, विश्रुत, करज, कोटि, इन्द्र, भीमेष्वर, अगस्तेष्वर, सोम, नन्दी, कार्तिकेय, ब्रह्मा, भृगु, कपिला एवं सिद्वार्थ का उल्लेख इस पुराण में मिलता है।

निष्कर्ष : – मत्स्य पुराण के अनुसार भगवान शिव की उपासना भोग तथा मोक्ष दोनों ही प्रदान करती है। देवता, असुर तथा मनुष्य ने भी शिव की उपासना करके लाभ प्राप्त किया है। शुक्राचार्य, बाणासुर, जैगीषव्य जैसे लोगों ने शिव की उपासना करके दुर्लभ वर तथा पद प्राप्त किया। शिव की उपासना मूर्ति तथा लिंग दोनों ही प्रकार से की जा सकती है। शिव की मूर्तियों में हरिहर एवं अर्द्धनारीष्वर की उपासना महत्वपूर्ण है। इस पुराण में लिंग पूजा को भी महत्व दिया गया क्योंकि लिंग के माध्यम से तीनों देवों की उपासना एक साथ की जा सकती है। इसके मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपरी भाग में रूद्र का निवास होता है। लिंग कई प्रकार की धातुओं, पाषाण तथा मिट्टी से भी बनाए जा सकते थे। इस पुराण में तीनों देवों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) में अभूतपूर्व एकता देखने को मिलती है। इसमें शिवरात्रि व्रत को भी विशेष महत्व दिया गया है, इस व्रत का विधि–विधान के अनुसार पालन करने वाला व्यक्ति हजारों अष्वमेघ यज्ञ के बराबर फल प्राप्त करता है। इस पुराण में काशी तथा नर्मदा क्षेत्र का वर्णन विस्तृत रूप में मिलता है। काशी में मृत्यु प्राप्त करने वाले को तत्काल मोक्ष मिल जाती है क्योंकि यहाँ पर मृत व्यक्ति के कान में स्वयं भगवान शिव आशीर्वादात्मक मंत्र बोलते हैं। काशी में निवास करने वाले लोगों के लिए इन्द्र की ओर से काम, क्रोध, लोभ तथा निद्रा व आलस्य जैसी बाधाएँ डाली जाती हैं। इन बाधाओं से पार पाने के बाद ही काशी में निवास संभव हो पाता है। नर्मदा की महिमा का गुणमान करते हुए कहा गया है कि इसके तट पर निवास करने वाले समस्त प्राणी भगवान शिव को प्राप्त हो जाते हैं। नर्मदा, गंगा, यमुना, सरस्वती से अधिक पुण्य देने वाली नदी है। इसके दर्शन मात्र से व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाते हैं। इस पुराण में नर्मदा के समीप स्थित अनेक छोटे–बड़े तीर्थों (कावेरी संगम, अमरकंटक, मन्त्रेष्वर, भीमेष्वर इत्यादि) का वर्णन भी मिलता है।मत्स्य पुराण में भगवान शिव को परमब्रह्म, परमसत् तथा परमतत्व स्वीकार किया गया है तथा उनके दो रूप सगुण व निर्गुण बताए गए हैं। सगुण रूप में वे सृष्टि के सृजनकर्ता, प्रलय के कारण, नीलकण्ठ, चन्द्रमा, त्रिशूल, पिनाक तथा जटाजूटधारी, देवाधिदेव, पशुपति, विष्वरूप, त्रिनेत्र, ब्रह्मा, विष्णु, रूद्ररूपधारी, उमापति, परमेष्वर, कालस्वरूप, अजन्मा, शाष्वत, परमज्ञान तथा कैवल्य ज्ञान प्रदान करने वाले व भूतपति कहे गए जबकि निर्गुण रूप में वे प्रणवरूप, अव्यक्त, ब्रह्मा, विष्णु तथा इन्द्र जैसे देवताओं द्वारा अगम्य एवं भवातीत कहे गए। मत्स्य पुराण के अनुसार भगवान शिव की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता दोनों ही कल्याणकारी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मत्स्य पुराण 47/126–165
2. विष्वात्मने विष्वसृजे विष्वमावृत्य तिष्ठते। भक्तानुकम्पिने नित्यं दिशते यन्मनोगतम्।।, (मत्स्य पु0 132/28–29)
3. मत्स्य पुराण 154/179–184
4. मत्स्य पुराण, 154/345–351
5. मत्स्य पुराण, 250/28–40
6. भक्तानुकम्पी भावज्ञो भुवनादीष्वरो विभुः। यज्ञाग्रभुक् सर्वहविः सौम्यः सोमः स्मरान्तकृत्।।, (मत्स्य पुराण, 250/49)
7. एवं मन्वादयो देव! वदन्ति परमर्षयः। , (म0 पु0 187/87)
8. मत्स्य पुराण 183/44–48,57–59
9. अविमुक्तं समासाद्य लिङ्गमर्चयते नरः। कल्पकोटिशतैष्चापि नास्ति तस्य पुनर्भवः।।, (म0पु0, 185/55)
10. म0पु0 185/56–60
11. रूद्ररूपाय शर्व्वाय नमः संहारकारिणे।

नमः शूलयुधाधृष्य नमो दानवधातिने।। (म0पु0 249/39)

12. मत्स्य पुराण 154/7
13. मत्स्य पुराण 250/30
14. मत्स्य पुराण 95/32–35
15. विमुक्तं न मया यस्मान्मोक्ष्यते वा कदाचन। महत् क्षेत्रमिदं तस्मादविमुक्तमिदंस्मृतम्।।, (म0पु0 180/54)
16. मत्स्य पुराण 181/19–21
17. मत्स्य पुराण 182/6–7
18. मत्स्य पुराण 183/102
19. कामः क्रोधष्चलोभष्च दम्भस्तम्भोऽतिमत्सरः।। निद्रा तन्द्रातथाऽऽलस्यपैशून्यमितितेदश। अविमुक्तेस्थिताः विघ्नाः शक्रेणविहिताः स्वयम्।। , (म0पु0 184/29–30)
20. मत्स्य पुराण 185/66–67
21. मत्स्य पुराण 186/10–11